अथवा, जे० एस० मिल के उपयोगितावाद सिद्धांत (J. S. Mill's Theory of Utilitarianism) की विवेचना करें।

उत्तर—यद्यपि जे० एस० मिल, जॉन स्टुअर मिल बेन्थन का शिष्य था, तथापि उसने बेन्थन के उपयोगितावाद के सिद्धांत में काफी परिवर्तन ला दिया। **जे० एस० मिल** ने स्वयं एक बार कहा है कि "मैं एक ऐसा शिष्य हूँ जिसने अपने स्वामी की अवहेलना कर दी।" मिल ने बेन्थम की सुखी अस्थियों के ढाँचें को माँस, मज्जा एवं रक्त से परिपूरित करने का प्रयास किया।

बेन्थम के उपयोगितावाद में परिवर्तन लाने का उसका मुख्य उद्देश्य उसकी कठोरता को दूर करना था। अतएव जे० एस० मिल ने बेन्थम के उपयोगितावाद में निम्नलिखित संशोधन किया है :

(i) बेन्थम के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य स्वार्थी होता है। वह सदा अपने हित में ही केन्द्रित रहता है। अतएव उसका लक्ष्य अपने सुख की प्राप्ति करना होता है। वह दूसरों के सुख एवं दुःख को नहीं समझ सकता।

इसके स्थान पर मिल ने बतलाया कि मनुष्य सिर्फ स्वार्थी ही नहीं होता, वह परमार्थी भी होता है। उसमें केवल अपने ही सुख की इच्छा नहीं होती, अपितु दूसरे के सुख के लिए न्याय की भावना होती है। लेकिन स्वार्थ की भावना के स्थान पर परमार्थ की भी भावना को प्रतिष्ठित करने से उपयोगितावाद की जड़ ही हिल जाती है।

(ii) बेन्थम का यह विश्वास था कि सभी सुख, गुणों में एक जैसे होते हैं तथा अंतर केवल उनकी मात्रा में ही होता है। उसने कहा था कि "सुख की मात्रा समान होने पर बच्चों का खेल उतना ही सुखद है, जितना की कविता।" परन्तु जे० एस० मिल ने सुखों के गुण पर बल दिया। उसने यह स्वीकार किया की सुखों में सिर्फ मात्रा में ही नहीं अपितु गुण में भी अंतर होता है। उसका विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति को उच्चतर सुख की प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए और निम्नतम सुखों से बचना चाहिए। मिल के शब्दों में, "एक असंतुष्ट मानव होना, एक संतुष्ट सुअर से अच्छा है। एक असंतुष्ट सुकरात होना, एक संतुष्ट मूर्ख से अच्छा है।"

(iii) बेन्थम ने बताया था कि आनन्द को प्रत्यक्ष रूप से मापा जा सकता था, लेकिन सुख के गुणात्मक पहलू पर बल देने के कारण मिल ने उपरोक्त-कथन को पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दिया।

मिल के अनुसार सुख को मापने का विचार बिल्कुल ही असंगत है।

(iv) बेन्थम ने बताया कि सिर्फ बाह्य वस्तुओं जैसे प्राकृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, लौकिक, धार्मिक आदि सुख-दुःख का संगत है लेकिन मिल ने कर्त्तव्य भावना को ही सुख का संगत माना है। उसके अनुसार जब मनुष्य अनुचित कार्य करता है तो उसकी भावनाओं को चोट पहुँचती है, एवं उसकी आत्मा उसे कोसती है, इसके विपरीत जब वह कोई सुकर्म करता है तो उसे आंतरिक आनन्द का अनुभव होता है।

इस प्रकार, जहाँ बेन्थम के अनुसार सुख के स्रोत सिर्फ बाह्य है। मिल ने बाह्य एवं आन्तरिक दोनों ही क्षेत्रों को सुख का स्रोत माना है।

सुख और दुःख के आंतरिक स्रोत का स्पष्टीकरण कर मिल ने उपयोगितावाद के सिद्धांत को बिल्कुल ही ध्वस्त कर दिया।

(v) मिल का बेन्थम के विचारों से एक प्रमुख भिन्नता यह भी है कि उसने मानसिक उत्कर्ष की प्राप्ति करना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बताया।

मिल का विश्वास था कि मनुष्यों को वही कार्य करना चाहिए जो उसके जीवन के उत्कर्ष की सिद्धि में सहायक हो सके।

लेकिन बेन्थम ने सुख की उपलब्धि एवं दुख के परिहार को ही जीवन का चरम लक्ष्य माना। इसके विपरीत मिल का यह विश्वास था कि वही सुख सराहनीय हो सकता है जो व्यक्तियों की उत्कर्ष भावना को उच्च कर सके।

इस प्रकार मिल ने अच्छे जीवन को सुखमय जीवन से श्रेष्ठ माना। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नैतिकता सुख से महान है, क्योंकि नैतिक सिद्धांतों के अनुसरण करने से अच्छे जीवन की कल्पना की जा सकती है।

अतएव Dr. C.L. Wayper ने ठीक ही कहा है कि "उपयोगितावादी दर्शन में नैतिक सिद्धांत का समावेश कर मिल ने बेन्थम के विचार में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।"

मिल ने राज्य को एक नैतिक संस्था माना जिसका उद्देश्य सुख की वृद्धि करना नहीं, अपितु व्यक्तियों के गुणों का विकास करना है।

(vi) मिल ने नैतिकता को एक सामाजिक उद्देश्य के रूप में देखा। उसने इस विचार को भी रखा कि प्रत्येक व्यक्ति सुख प्राप्ति रखने की आकांक्षा रखता है तथा इसको प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है, आगे बढ़ने एवं सार्वजनिक सुख को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को प्रयास करना चाहिए।

इस प्रकार जहाँ बेन्थम ने समाज को कृत्रिम कहकर पुकारा है वहाँ मिल ने समाज को अत्यधिक महत्वपूर्ण बतलाया।

(vii) स्वतंत्रता विषयक बेन्थम के सिद्धांतों में भी मिल ने परिवर्तन किया। बेन्थम के अनुसार स्वतंत्रता उपयोगितावाद के सिद्धांत की अनुगामनी होती है, अग्रगामनी नहीं। परन्तु मिल के अनुसार स्वतंत्रता का अपना स्वयं महत्व होता है और वह स्वयं अपने में एक साध्य है। उपयोगितावाद के लिए स्वतंत्रता साधन नहीं होती।

(viii) बेन्थम का प्रजातंत्र विश्वव्यापी है लेकिन मिल का प्रजातंत्र सापेक्षवादी है। बेन्थम के विपरीत मिल ने बतलाया कि प्रजातंत्र सभी देशों एवं सभी व्यक्तियों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। प्रजातंत्र की सफलता के लिए कुछ शर्त्तों की आवश्यकता होती है एवं प्रजातंत्र वहीं सफल हो सकता है जहाँ वे शर्त्तें पूरी होती हैं, चूँकि वे शर्त्तें सभी जगहों एवं सभी व्यक्तियों में विद्यमान नहीं होती अएवत सभी देशों के लिए पूर्ण शर्त्तों के अभाव में प्रजातंत्र कदापि सफल नहीं हो सकता। अतएव **डॉ० सी० एल० वेपर** ने ठीक ही लिखा है, "जहाँ बेन्थम मनुष्य के स्वभाव के कारण प्रजातंत्र की सार्थकता को प्रमाणित करता है। मिल मनुष्य की परिस्थिति के कारण इसका समर्थन करता है।"

(ix) राज्य के आधार सम्बन्धित बेन्थम के सिद्धांत में भी मिल ने संशोधन किया। जहाँ बेन्थम ने राज्य को व्यक्तिगत हित पर आधारित माना वहाँ मिल के अनुसार राज्य व्यक्ति की इच्छा हित का नहीं उसके संकल्प का प्रतिफल है। मिल ने तो यहाँ तक कहा है कि "एक व्यक्ति जिसकी अपनी मान्यता है सामाजिक शक्ति में, उन 99 व्यक्तियों के बराब है जिनमें केवल व्यक्तिगत हित की भावना है।"

(x) राज्य के कार्य विषयक बेन्थम के विचार में भी मिल ने संशोधन किया। बेन्थ के विपरीत मिल ने यह भी आवाज उठाई कि सपंत्ति कोई ऐसी पवित्र वस्तु नहीं होती राज्य उसमें हस्तक्षेप करे। संपत्ति की यथार्थता उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है राज्य का यह कर्त्तव्य होता है कि संपत्ति को पूर्ण उपयोगी बनाने का प्रबंध करे। इस प्र

बेन्थम की अपेक्षा मिल समान तौर पर बहुत हद तक आर्थिक क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप करने के अधिकार का समर्थन करता है।

अंत में प्रतिनिधि शासन संबंधी बेन्थम के विचार में भी मिल ने बहुत संशोधन किए। मिल ने बेन्थम की गुप्त मतदान प्रणाली का समर्थन नहीं किया है। इसी प्रकार मिल ने बेन्थम के सार्वजनिक मतदान के सिद्धांत का समर्थन तो किया है किन्तु उसने स्त्रियों के मताधिकार का भी समर्थन किया है, जिसे बेन्थम ने स्वीकार नहीं किया था। पुनः बेन्थम ने कहा है कि मताधिकार उसे ही मिलना चाहिए जो पढ़ना जानता है। परन्तु मिल ने कहा कि उसे पढ़ने के अलावा लिखने एवं गणना करने आना चाहिए। इसके अतिरिक्त जहाँ बेन्थम लॉर्ड सभा का विरोध करता है वहाँ मिल लॉर्ड सभा का समर्थन करता है।

आलोचना—बेन्थम के उपयोगितावाद में मिल द्वारा किए जाने वाले संशोधन की कई आलोचना की जाती है :

(i) यहाँ कहा जाता है कि बेन्थम के सिद्धांत में मिल द्वारा लाए गए कुछ संशोधन भ्रामक एवं तर्कहीन है। उदाहरण के लिए मिल ने उसके परिणाम पर ही नहीं उसके गुणात्मक पहलू पर ध्यान दिया है। लेकिन मिल का यक गुणात्मक सुख भी पूर्ण विवादास्पद है। वास्तविकता तो यह है कि हम न तो सुख की मात्रा को ही माप सकते हैं और न उसके गुण का ही स्पष्ट निर्णय कर सकते हैं। इस संदर्भ मे **प्रो॰ सेवाईन** ने ठीक ही लिखा कि मिल के उपयोगितावाद में पूर्ण अनिश्चितता भी आ गई है क्योंकि मिल ने सुख के गुण की जाँच के लिए कभी कोई कसौटी ही नहीं बताई। यदि कोई कसौटी भी होती वह कसौटी स्वयं सुख नहीं होता।

(ii) दूसरी आपत्ति यह की जाती है कि राज्य के हस्तक्षेप के औचित्य का मिल द्व समर्थन भी संदिग्ध एवं अस्पष्ट है। मिल इस सत्य का अनुभव करने में पूर्णतः असफ रहा। यदि राज्य हस्तक्षेप की नीति को त्याग देता है तो संघों का महत्वपूर्ण स्थान हो ज है। मिल की यह भारी भूल थी कि उसने संघों के रचनात्मक महत्वों को स्वीकार किया है।

(iii) तीसरी आपत्ति यह की जाती है कि मिल को विश्वास था कि मानव की प्र भविष्य में असम्भावी है। उज्जवल भविष्य के संबंध में मिल की कल्पना का एक आधार उसका मानव में विश्वास है। लेकिन दूसरी ओर उसने स्वयं मनुष्य के स्वभाव निकृष्ट भी बताया। अपनी पुस्तक 'Subjection of Women' में मिल ने लिखा है "पुरुषों मेंएक निरंकुश जैसे सारे दुर्गुण होते हैं एवं स्त्रियों में एक गुलाम में पाई जाने सारी बुराईयाँ होती है। अतएव **वेपर (Wayper)** ने ठीक ही कहा है कि, "एक ओर व के अहम् स्वभाव का चित्रण करना एवं दूसरी ओर व्यक्ति के इसी स्वभाव पर मानव के उज्जवल भविष्य की कल्पना करना संगत नहीं प्रतीत होता है।"

अंत में आलोचकों ने यह भी कहा है कि मिल पुराने एवं नये विचारों का मधुर करने में पूर्णतया असमर्थ रहा है। उसने उपयोगितावाद के पुराने सिद्धांतों में सिर्फ कि लगाई। उन्हें वह पूर्णरूप से परिवर्तित नहीं कर सका। उदाहरण के लिए उसने मताधिकार का समर्थन तो किया। परन्तु बहुल मताधिकार के सिद्धांत को अपनाकर मताधिकार के सार को नष्ट कर दिया। **Hearnshow** ने ठीक ही लिखा है, "मिल एवं नये विचारों में समन्वय नहीं कर सका।" इसका फल मिश्रण नहीं अपितु उलझन उसने उपयोगितावाद के भवन के ढाँचे में नई मंजिलें तो जोड़ी, लेकिन उसकी आध को कमजोर बना दिया। मिल ने सोचा कि उसने नये एवं पुराने विचारों का समन्व

डाला है लेकिन इसमें वह असफल रहा है। वह न तो नये दर्शन का निर्माण कर
और न पुराने दर्शन का पूर्ण रूप से त्याग कर पाया है। वह कुल मिलाकर रचनात्मक
नहीं था।

निष्कर्ष—इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मिल के सिद्धांत भी विवादग्रस्त, असं
भ्रांत हैं। अतएव बेन्थम के उपयोगितावाद के सिद्धांत में यदि मिल के परिवर्तन
स्वरूप है तो **Invor Brown** के शब्दों में निष्कर्ष स्वरूप में कह सकते हैं, "मिल ने
के दर्शन की रूठता का मृदुकरण तो किया परन्तु ऐसा करने में उसने उपयोगिता
अधिक मानवीय बनाने के साथ-साथ अल्पसंगत भी बना दिया।"